दैनिक जागरण
वर्तमान की उपेक्षा करने वालों का भविष्य कभी सुंदर नहीं हो सकता

अल्पसंख्यकों का भरोसा

राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन के सांसदों की बैठक को संबोधित करते हुए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की ओर से यह कहा जाना एक तरह से समय की मांग को पूरा करना है कि उनकी सरकार अब अल्पसंख्यकों का भी भरोसा हासिल करेगी। ऐसा किया जाना इसलिए आवश्यक है, क्योंकि भाजपा की प्रचंड जीत के बाद यह माहौल बनाने की कोशिश हो रही है कि अब अल्पसंख्यकों की समस्याएं बढ़ने वाली हैं। यह माहौल केवल भारतीय मीडिया के ही एक हिस्से की ओर से नहीं बनाया जा रहा है, बल्कि विदेशी मीडिया की ओर से भी बनाया जा रहा है। सबसे खराब बात यह है कि ऐसा करते हुए अल्पसंख्यकों और खासकर मुसलमानों को भयभीत करने की भी दुष्चेष्टा हो रही है। इसमें आम तौर पर खुद को लिबरल और सेक्युलर कहने वाले लोग शामिल हैं। मोदी सरकार के प्रति अंध विरोध से भरा यह विशिष्ट वर्ग यह भी स्थापित करने में जुटा हुआ है कि लोगों को बहकाकर जनादेश का हरण कर लिया गया है।

अपनी बौद्धिकता के अहंकार में घोर असहिष्णुता का परिचय दे रहे इस वर्ग की परवाह न करते हुए मोदी सरकार को यह देखना होगा कि वे घटनाएं कैसे थमें जिनकी आड़ लेकर यह प्रचारित करने की कोशिश की जाती है कि मुस्लिम समाज के प्रति उग्र हिंदू संगठनों का उत्पात बढ़ रहा है। यह काम किस सुनियोजित तरीके से किया जा रहा है इसका ताजा उदाहरण है मध्य प्रदेश की वह घटना जिसमें कथित गौ रक्षकों ने कुछ मुस्लिमों की पिटाई इस संदेह में की कि उनके पास गोमांस है। यह शर्मनाक घटना 22 मई की है, लेकिन दुष्प्रचार यह किया गया कि भाजपा की जीत के बाद बेलगाम हिंदू संगठनों का उत्पात शुरू हो गया। हालांकि यह घटना कांग्रेस शासित राज्य की है, लेकिन उसके लिए मोदी सरकार को ही जवाबदेह बनाया जा रहा है।

इसमें कोई दोराय नहीं कि कानून एवं व्यवस्था राज्यों का विषय है, लेकिन इसके बावजूद मोदी सरकार को यह सुनिश्चित करना होगा कि बेलगाम गौ रक्षकों का उत्पात थमे। ऐसा करके ही मुस्लिम समाज का ध्यान इस ओर खींचा जा सकता है कि मोदी सरकार उनके भी कल्याण के लिए प्रतिबद्ध है। इस प्रतिबद्धता के प्रमाण भी हैं। इससे कोई इन्कार नहीं कर सकता कि मोदी सरकार की जन कल्याणकारी योजनाओं का लाभ मुस्लिम समाज को भी मिला है। रसोई गैस सिलेंडर, आवास, शौचालय और बिजली उपलब्ध कराने वाली योजनाएं बिना किसी भेदभाव उन तक पहुंची हैं, लेकिन इन योजनाओं के मुकाबले मुस्लिम समाज के बीच यह दुष्प्रचार अधिक असरदार दिखता है कि भाजपा और संघ उन्हें हाशिये पर ले जाना चाहते हैं। यह दुष्प्रचार उन लोगों की ओर से जानबूझकर किया जा रहा है जिनका मकसद मुस्लिम समाज को बरगलाकर अपना राजनीतिक उल्लू सीधा करना है। चूंकि ऐसा लगता नहीं कि ऐसे लोग मुसलमानों को गुमराह करने से बाज आने वाले हैं इसलिए मोदी सरकार को और अधिक सतर्क रहना होगा। इसी के साथ यह भी अपेक्षित है कि मुस्लिम समाज जमीनी हकीकत देखने की कोशिश करे। उसे यह सोचना होगा कि आखिर कोई सरकार इतने बड़े समुदाय की अनदेखी कर देश को आगे ले जाने का काम कैसे कर सकती है?

आपदा प्रबंधन

आपदा कभी किसी को बताकर नहीं आती है, लेकिन पूर्व प्रबंधन एवं सचेत रहने से ही आपदा के समय होने वाले नुकसान को कम किया जा सकता है। पहाड़ी प्रदेश हिमाचल प्राकृतिक आपदाओं के लिहाज से संवेदनशील है। प्रदेश में अकसर भूकंप के झटके आते रहते हैं। बादल फटने, बाढ़ एवं भूस्खलन के कारण भी प्रदेश में करोड़ों रुपये की संपत्ति को नुकसान होता है। चिंताजनक पहलू यह है कि किसी हादसे के बाद आपदा प्रबंधन बहुत कम दिखता है। प्रदेश में ऐसे कई मामले सामने आए हैं जब कोई प्राकृतिक आपदा आने के बाद राहत के लिए काफी देर तक इंतजार करना पड़ा। लोगों को त्वरित राहत न मिलने के कारण नुकसान काफी ज्यादा बढ़ जाता है। अकसर देखा जाता है कि आपदा प्रबंधन के लिए कई मॉक ड्रिल की जाती हैं। लोगों को आपदा के समय सुरक्षित रहने के लिए जागरूक भी किया जाता है, लेकिन जब आपदा आती है तो बचाव की तैयारी आधी-अधूरी दिखती है। ऐसी स्थिति किसी भी सूरत में सही नहीं कही जा सकती है। चंबा जिला में मंगला के समीप पहाड़ी दरकने के कारण पोकलेन मशीन सहित ऑपरेटर मलबे में दब गया था। हादसा रात को हुआ मगर बचाव कार्य अगले दिन सुबह शुरू किया गया। नेशनल डिजास्टर रिस्पांस फोर्स की टीम भी हादसे के अगले दिन मौके पर पहुंची। इससे तत्काल आपदा प्रबंधन की स्थिति का पता चलता है। हालांकि आपदा के समय राहत पहुंचाने वाली टीम में प्रशिक्षित सदस्य होते हैं, लेकिन जब टीम किसी हादसे के दौरान समय पर मौके पर न पहुंचे तो फिर उस राहत को कोई फायदा नजर नहीं आता है। यह पक्ष भी उदास करता है कि तमाम जागरूकता अभियानों के बावजूद कई लोगों को यह पता नहीं होता है कि किसी हादसे या आपदा के समय बचाव के लिए कहां संपर्क करना है। हैरत यह भी है कि कई लोग प्रशासन और आपदा प्रबंधन प्राधिकरण की ओर से दी जाने वाली चेतावनियों को नजरअंदाज करते हैं। यदि हम किसी आपदा के समय नुकसान को कम करना चाहते हैं तो जरूरी है कि इसकी तैयारी पहले से की जाए।

सफलता को देनी होगी निरंतरता

विवेक काटजू

विदेश नीति के मोर्चे पर पहले कार्यकाल में मोदी व्यापक रूप से सफल रहे हैं। ऐसे में कोई संदेह नहीं कि आने वाले वर्षों में वह उस सफलता को फिर से दोहराएंगे

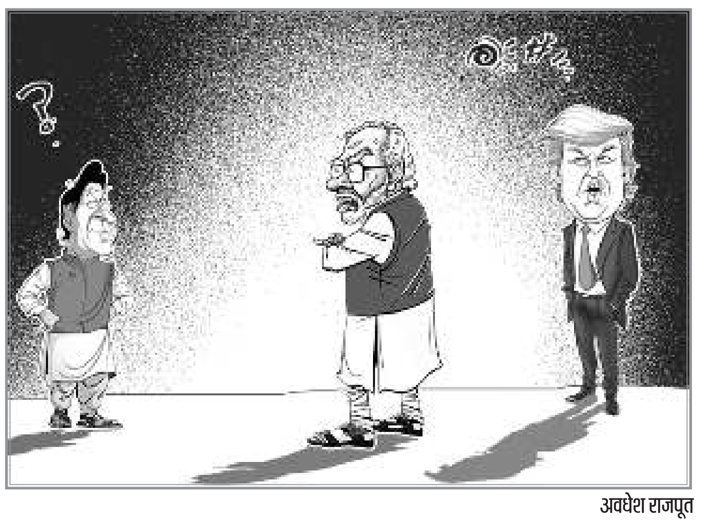

अवधेश राजपूत

वर्ष 2014 में नरेंद्र मोदी ने विश्व पटल पर अपने लिए तब विशेष सम्मान अर्जित किया जब उन्होंने दुनिया के सबसे बड़े लोकतंत्र में किसी दल को तीस साल बाद अपने दम पर बहुमत दिलाने का करिश्मा किया था। अब उनकी शानदार जीत न केवल उन्हें अंतरराष्ट्रीय स्तर पर स्थापित करेगी, बल्कि इससे दुनिया के पहली पांत के नेताओं में उनकी स्थिति और मजबूत होगी। इसके साथ ही क्षेत्र में उनके समकक्ष और दुनियाभर की बड़ी शक्तियों के नेता उनके और भारत के साथ रिश्ते प्रगाढ़ करने के प्रयास करेंगे, क्योंकि निकट भविष्य में वह दुनिया की एक उभरती हुई शक्ति के निर्विवाद नेता रहने वाले हैं।

अपने दूसरे कार्यकाल की शुरुआत में उन्हें बाहरी मोर्चे विशेषकर पश्चिमी पड़ोस में चुनौतीपूर्ण हालात का सामना करना होगा। हमेशा की तरह पूरा ध्यान पाकिस्तान पर टिका रहेगा। हालांकि बालाकोट हमले के साथ मोदी ने पाकिस्तान और अंतरराष्ट्रीय समुदाय को स्पष्ट रूप से संदेश दे दिया था कि भारत पाकिस्तान की धरती पर उसके खिलाफ पनप रहे आतंक का फन कुचलने के लिए अपने सैन्य बलों का प्रयोग करने से भी गुरेज नहीं करेगा। साथ ही मोदी ने पिछले तीन वर्षों से भी बढ़िया नीति अपनाए रखी है कि पाकिस्तान से भारत तब तक बातचीत नहीं करेगा जब तक कि वह भारत के खिलाफ आतंक की नीति नहीं छोड़ता।

पाकिस्तानी प्रधानमंत्री इमरान खान वार्ता की गाड़ी को पटरी पर वापस लाना तो चाहते हैं, लेकिन वह यह आश्वासन नहीं दे रहे कि उनका देश भारत के खिलाफ आतंक फैलाने वाले लश्कर ए तोइबा और जैश ए मुहम्मद जैसे आतंकी संगठनों को सहयोग देना बंद कर देगा। निश्चित रूप से ऐसे कोई संकेत नहीं हैं कि पाकिस्तान की भारत नीति निर्धारित करने वाली सेना भारत के खिलाफ अपनी परंपरागत दुश्मनी के भाव में कोई ढील तक देना चाहती है। ऐसे हालात में यह मोदी को फैसला करना होगा कि क्या वह इमरान खान की इच्छा को देखते हुए आतंक के मसले पर बिना गारंटी के ही वार्ता शुरू करेंगे। इसमें पाकिस्तान के साथ उनके कड़वे अनुभव ही काफी होने चाहिए कि वह उसे लेकर कोई झूठी उम्मीद न रखें। भले ही अंतरराष्ट्रीय समुदाय उनसे पाकिस्तान को एक और अवसर देने की दुहाई दे, लेकिन उन्हें ऐसा करने के मोह से बचना चाहिए।

अफगानिस्तान के हालात और जटिल बनते जा रहे हैं। वहां हिंसा रुकने का नाम नहीं ले रही है। अमेरिका वहां समाधान तलाशने के लिए बेचैन है और इसके लिए तालिबान के साथ बातचीत भी कर रहा है, लेकिन तालिबान अफगान सरकार के साथ संघर्षविराम को लेकर कोई लचीलापन नहीं दिखा रहा है और अपनी कुछ खास मांगों पर अड़ा हुआ है। किसी समाधान को लेकर जगी शुरुआती उम्मीदें भी धूमिल पड़ रही हैं। मोदी ने तालिबान के साथ कोई कड़ी नहीं जोड़ी है जबकि यह संगठन अब अंतरराष्ट्रीय स्तर पर स्वीकृति हासिल करता जा रहा है। तालिबान के लेकर भारत की आपत्तियां वाजिब हैं, लेकिन कूटनीति का यह तकाजा भी है कि उसमें व्यावहारिकता से काम लिया जाए। तालिबान से संपर्क का यह अर्थ नहीं होगा कि भारत उसकी विचारधारा का समर्थन करता है और न ही इससे अफगान सरकार को भारत का समर्थन ही कमजोर होगा।

मोदी ने पश्चिम एशिया की उठापटक में न पड़कर बहुत समझदारी दिखाई। साथ ही साथ उन्होंने इस क्षेत्र के सभी देशों से बढ़िया द्विपक्षीय रिश्ते बनाए। अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप की सख्त ईरान नीति के चलते जरूर इसमें कुछ पेंच फंस गए हैं। ईरान पर लगे अमेरिकी प्रतिबंधों ने भारत के लिए ईरान से कच्चे तेल की खरीद में अवरोध पैदा कर दिया है। अमेरिका और ईरान के बीच कुछ हिंसक संघर्ष छिड़ने की भी आशंका है। इससे खाड़ी क्षेत्र में कुछ उथलपुथल मचेगी जहां लाखों भारतीय रहते हैं और यह क्षेत्र भारतीय ऊर्जा सुरक्षा के लिए भी महत्वपूर्ण है। भारत ट्रंप की ईरान नीति को तो नहीं प्रभावित कर सकता, लेकिन उसे सभी पक्षों के साथ संवाद कर यह सुनिश्चित करना चाहिए कि किसी भी तरह का हिंसक संघर्ष न छिड़े। इससे केवल यह क्षेत्र ही नहीं, बल्कि पूरी दुनिया बड़ी मुश्किल में फंस जाएगी। साथ ही मोदी को नेपाल, श्रीलंका और बांग्लादेश जैसे उन पड़ोसियों पर भी ध्यान देना होगा जहां चीन अपनी पैठ बनाने में लगा है। इन देशों को यह भरोसा दिलाना जरूरी है कि भारत कभी उनके आंतरिक मामलों में दखल नहीं देगा, लेकिन वे भी अपनी सुरक्षा को लेकर सचेत रहें।

चीन के राष्ट्रपति शी चिनफिंग ने मोदी के दूसरे कार्यकाल में भारत-चीन संबंधों को नए क्षितिज पर ले जाने की उम्मीद जताई है। मगर समस्या यह है कि चीन हमेशा भारत के मामले में टांग अड़ाता है। चाहे सीमा विवाद हो, एकतरफा व्यापार या परमाणु आपूर्तिकर्ता समूह में भारत का प्रवेश, चीन भारत को परेशान करता रहता है। हाल में मसूद अजहर को अंतरराष्ट्रीय आतंकी घोषित कराने के मामले में भी उसने अमेरिका द्वारा डाले गए दबाव के बाद ही समर्पण किया। बेल्ट एंड रोड इनिशिएटिव सहित पाकिस्तान के साथ चीन की जुगलबंदी भारत की सुरक्षा के लिए एक बड़ी चुनौती बनी हुई है। चीन को लेकर मोदी ने चौकसी भी बरती है। उन्होंने जहां चीन से सहयोग बढ़ाया तो सुरक्षा मसलों को लेकर सावधान भी रहे। साथ ही हिंद-प्रशांत क्षेत्र में उन्होंने बिना किसी गुट में पड़े जापान जैसे सहयोगी बनाए।

अमेरिका दुनिया का सबसे शक्तिशाली देश है। उसके पास तकनीक का वह स्रोत है जो भारत के विकास के लिए बेहद अहम है। मोदी ने इस रिश्ते को बखूबी ढंग से आगे बढ़ाया है। उन्होंने इसमें द्विपक्षीय व्यापार और अमेरिकी आव्रजन नीतियों जैसे टकराव के बिंदुओं को आड़े नहीं आने दिया। ट्रंप कुछ अस्थिर स्वभाव के नेता हैं जिनके साथ ताल बिठाना कुछ मुश्किल है। इसके लिए मोदी ने कूटनीतिक धैर्य का परिचय दिया और अमेरिका के मामले में यह जरूरी भी था। यह बात अलग है कि अमेरिका को भी भारत की उतनी ही जरूरत है जिसे वह स्वीकार भी करता आया है। यूरोपीय संघ और रूस के साथ रिश्तों में भी मोदी को संतुलन साधना होगा। रक्षा, अंतरिक्ष और परमाणु ऊर्जा जैसे क्षेत्रों में रूस की अहम भूमिका है। मेक इन इंडिया कार्यक्रम के लिए भी ये देश महत्वपूर्ण हैं। वहीं हिंद-प्रशांत क्षेत्र, अफ्रीका और दक्षिण अमेरिका पर भी निरंतर रूप से ध्यान देना होगा। मोदी ने पहले कार्यकाल में इन क्षेत्रों पर ध्यान देकर सही किया जिसे निरंतर बनाए रखना होगा।

जहां भारत के वैश्विक हितों का विस्तार हो रहा है तो उसके साथ ही कूटनीतिक एवं सुरक्षा के मोर्चे पर सरकारी मशीनरी और संस्थानों की भी सही दिशा और गति चाहिए। देश सेवा में भारतीय विदेश सेवा ने अपनी उपयोगिता सिद्ध की है, लेकिन अब उसमें विस्तार जरूरी हो गया है जिसमें नए क्षेत्रों और विशेषज्ञों को भी जोड़ा जाए। साथ ही सुरक्षा, प्रतिरक्षा एवं विदेश नीति से जुड़े संस्थानों के बीच समन्वय भी और बेहतर होना चाहिए। विदेश नीति के मोर्चे पर अपने पहले कार्यकाल में मोदी व्यापक रूप से सफल रहे हैं। ऐसे में कोई संदेह नहीं कि आने वाले वर्षों में वह उस सफलता को फिर से दोहराएंगे।

(लेखक विदेश मंत्रालय में सचिव रहे हैं)

response@jagran.com

सुलगते सवाल उठाती सूरत की आग

अभिषेक कुमार सिंह

सूरत अग्निकांड त्रासदी आग से बचाव के नाकाफी उपायों और देश के बेतरतीब शहरीकरण की पोल खोलती है

मानव इतिहास के पन्ने पलटें तो हमें पता चलता है कि आग ने इंसान को वह ताकत दी, जिससे उसने अपनी जिंदगी आसान करने का ढर्रा सीखा, लेकिन सदियों पहले की उसकी यह कामयाबी इक्कीसवीं सदी में आकर तब एक बड़ी नाकामी में तब्दील होती लगती है, जब सूरत की एक इमारत में मामूली शॉर्ट सर्किट से भड़की आग में करीब 20 होनहार नौजवान (लड़के-लड़कियां) आंखों के सामने जलकर खाक हो जाते हैं। इमारत की चौथी मंजिल से अंधाधुंध कूदकर हाथ-पांव तुड़ाकर जो किसी तरह बचे, उनके वीडियो भी दिल दहलाने वाले हैं। हमारे वक्त की यह दर्दनाक त्रासदी आग फैलने के आधुनिक कारणों, बचाव के नाकाफी तरीकों और बेतरतीबी से हो रहे शहरीकरण की पोल खोलती है और योजना के स्तर पर कायम निकम्मेपन के चेहरे को भी उजागर करती है।

जरा सोचें कि जो कुछ सूरत में हुआ, क्या वह इससे पहले भी देश में बारंबार दोहराया नहीं जा चुका है। खासतौर से शहरों में हुए एक के बाद एक अनेक हादसे हुए हैं जहां आग की लपटें जानलेवा शै में बदल गईं और तमाम लापरवाहियों एवं कायदे-कानून की अनदेखी ने मामूली सी आग को हमारे विनाश के हथियार में तब्दील कर डाला। बताया जा रहा है कि तक्षशिला कोचिंग सूरत की जिस इमारत में चल रही थी, उस बिल्डिंग की छत प्लास्टिक शेड से ढकी हुई थी। वहां टायर रखे हुए थे और छत में कलाकारी के लिए बेहद ज्वलनशील थर्मोकोल का इस्तेमाल किया गया था। स्वाभाविक है कि जहां आग को न्योता देने के इतने अधिक इंतजाम हों, वहां बचाव के उपायों की लंबी फेहरिस्त कायदे से होनी चाहिए, लेकिन तय है कि सूरत के शहरी प्राधिकरण को इसकी कोई फिक्र नहीं थी। इसकी वजह से वहां ऐसे अनगिनत कोचिंग सेंटर उन इमारतों में चल रहे हैं जहां न तो निर्माण के कानूनों का पालन हुआ है और न यह देखा गया कि अगर किसी वजह से आग लगी तो लोगों को कैसे बचाया और बाहर निकाला जाएगा? थोड़ा पीछे लौटें तो इसी साल कुछ और ऐसे अग्निकांड हमारे जेहन में कौंधते हैं, जो चंद लापरवाहियों की ही देन हैं। जैसे इसी साल 12 फरवरी को देश की राजधानी दिल्ली के करोलबाग के एक होटल में लगी आग ने आनन-फानन में 17 जिंदगियां लील ली थीं।

नए हों या पुराने, दुनिया भर के तमाम शहरों में आग से महफूज बनाने वाले उपायों पर तभी कुछ नजर जाती है, जब वहां की इमारतों में कोई बड़ा हादसा होता है। अन्यथा इस मामले में लापरवाही सर्वत्र और सतत एक जैसी कायम है। असल में कथित विकास के नाम पर शहरों में जो कंक्रीट के जंगल खड़े किए गए हैं, वे आग से सुरक्षा के मामले में बेहद कमजोर साबित हो रहे हैं। मर्ज आग की ताकत बढ़ जाना नहीं, बल्कि यह है कि आग से सुरक्षा के जितने उपाय जरूरी हैं, तेज शहरीकरण की आंधी और अनियोजित विकास ने उन उपायों को हाशिये पर धकेल दिया है। विडंबना यह है कि शहरीकरण के सारे कायदों को धता बताते हुए जो कथित विकास हमारे देश या बाकी दुनिया में हो रहा है और जिसके तहत रिहाइश ही नहीं, होटलों, विभिन्न संस्थाओं और अस्पतालों के लिए ऊंची इमारतों के निर्माण का जो काम देश में हो रहा है, उसमें जरूरी सावधानियों की तरफ न तो शहरी प्रबंधन की नजर है और न ही उन संस्थाओं-विभागों को इसकी कोई फिक्र है जिन पर शहरों में आग से बचाव के कायदे बनाने और उन पर अमल सुनिश्चित कराने की जिम्मेदारी होती है। यहां तक कि नए बसा रहे शहरों तक में यह नहीं देखा जा रहा है कि आज से सौ-पचास साल बाद जब आबादी और ट्रैफिक का दबाव बढ़ेगा, तब वहां आग से बचने के क्या तौर-तरीके होंगे?

अनियोजित शहरीकरण के अलावा एक मुद्दा यह है कि इमारतों के निर्माण में बिल्डिंग को मौसम के हिसाब से ठंडा-गर्म रखने, वहां रहने वाले लोगों की जरूरतों के मुताबिक आधुनिक इलेक्ट्रॉनिक साजोसामान जुटाने में खूब काम हुआ है, लेकिन यही चीजें जरा सी लापरवाही पर भीषण अग्निकांड रच सकती हैं-इस ओर अधिक ध्यान ही नहीं दिया गया है। स्थिति यह है कि आज की ज्यादातर आधुनिक इमारतें ऐसे सामानों से बन रही हैं जिसमें आग को आमंत्रित करने वाली तमाम चीजों का इस्तेमाल होता है। आंतरिक साज-सज्जा के नाम पर फर्श और दीवारों पर लगाई जाने वाली सूखी लकड़ी, आग के प्रति बेहद संवेदनशील रसायनों से युक्त पेंट, रेफ्रिजरेटर, इनवर्टर, माइक्रोवेव, गैस का चूल्हा, इलेक्ट्रिक चिमनी, एयर कंडीशनर, टीवी और सबसे प्रमुख पूरी इमारत की दीवारों के भीतर बिजली के तारों का जाल बिछा है जो किसी शॉर्ट सर्किट की सूरत में छोटी सी आग को बड़े हादसे में बदल डालती है। इन सभी चीजों को आग से बचाने के इंतजाम भी प्रायः या तो किसी इलेक्ट्रॉनिक डिवाइस जैसे एमसीबी आदि के हवाले होते हैं या फिर फायर अलार्म के सहारे जो अक्सर ऐसी सूरत में काम करते नहीं मिलते हैं, क्योंकि उनकी समय-समय पर जांच नहीं होती।

दूसरा बड़ा संकट तंग रास्तों के किनारे पर ऊंची इमारतें बनाने के ट्रेंड ने पैदा किया है। ऐसी अधिकांश इमारतों में शायद ही इसकी गंभीरता से जांच होती हो कि यदि कभी अचानक आग लग गई तो क्या बचाव के साधन आसपास मौजूद हैं? कोई आपात स्थिति पैदा हो तो वहां निकासी का रास्ता क्या है? क्या वहां मौजूद लोगों को समय पर अलर्ट करने का सिस्टम काम कर रहा है? इस स्तर पर एक और बड़ी लापरवाही हो रही है। असल में हर बड़े शहर में बिना यह जाने ऊंची इमारतों के निर्माण की इजाजत दे दी गई है कि क्या उन शहरों के दमकल विभाग के पास जरूरत पड़ने पर उन इमारतों की छत तक पहुंचने वाली सीढ़ियां मौजूद हैं या नहीं? मिसाल के तौर पर देश की राजधानी दिल्ली में दमकल विभाग के पास अधिकतम 40 मीटर ऊंची सीढ़ियां हैं, पर यहां इमारतों की ऊंचाई 100 मीटर तक पहुंच चुकी है। यही हाल इसके एनसीआर इलाके का है। नोएडा में भी अधिकतम 42 मीटर ऊंची सीढ़ियां उपलब्ध हैं, पर यहां जो करीब दो हजार गगनचुंबी इमारतें हैं या जिनका निर्माण चल रहा है, उनमें से कुछ की ऊंचाई 300 मीटर तक है (निर्माणाधीन टावर-सुपरनोवा 300 मीटर ऊंचा होगा)। लगभग यही हाल देश के दूसरे बड़े शहरों में है।

कहने को तो देश के किसी भी हिस्से में कोई संस्था, फैक्ट्री इत्यादि अग्निशमन विभाग की तरफ से मिले अनापत्ति प्रमाण पत्र यानी एनओसी के बिना नहीं चल सकती, लेकिन सभी जानते हैं कि इस प्रावधान की अनदेखी होती है। जाहिर है जब लापरवाही और अनदेखी का ऐसा आलम हो तो न आग को रोका जा सकता है और न ही इस कारण होने वाले नुकसान को थामा जा सकता है।

(लेखक संस्था आइएफएस ग्लोबल से संबद्ध हैं)

response@jagran.com

ऊर्जा

नैतिकता

धर्म शब्द का तात्पर्य है नैतिक एवं जनकल्याण के मूल्यों को धारण करना। पूजा-पाठ, प्रार्थना, स्तुति आदि कर्मकांड धर्म के छोटे अंग हैं। नैतिकता से अभिप्राय है कि जीवन के लक्ष्य धर्म, अर्थ, काम एवं मोक्ष को अर्जित करने में शुचिता एवं जनकल्याण की भावना भी निहित हो। यदि 'काम' और 'अर्थ' को अर्जित करने के लिए कोई व्यक्ति अनैतिक आचरण करता है तो उसका अंतिम लक्ष्य मोक्ष उससे उतना ही दूर होता चला जाएगा। इसीलिए गीता में कर्म, अकर्म और विकर्म की व्याख्या है। विकर्म वे कर्म हैं जो मनुष्य को नहीं करने चाहिए। जैसे पाप कर्म स्वयं करना या परोक्ष रूप से इनका साथ देना या मूकदर्शक बने रहना। जैसे महाभारत में कौरवों की सभा में द्रोपदी के चीरहरण के समय पूरी सभा मूकदर्शक बनी देखती रही। आज भी सरेआम अबलाओं के साथ इस प्रकार की घटनाएं हो रही हैं, परंतु अक्सर सुनने में आता है कि वहां पर मौजूद लोग मूकदर्शक बने रहे। इस प्रकार का बर्ताव धर्म के विपरीत है।

आज नैतिक मूल्यों का हाल यह है कि एक मानव अपने स्वार्थों के लिए दूसरे मानव को निगलना चाहता है। इसका तात्पर्य है कि अर्थ कमाने में आज लोग बड़े पैमाने पर दूसरों के हितों की अनदेखी करते हुए बेईमानी द्वारा जनकल्याण के निमित्त धन को स्वयं के लिए एकत्र कर रहे हैं। इस प्रकार से अर्जित धन सच्चे अर्थों में वह अर्थ नहीं है जिसकी चर्चा हमारे अध्यात्म में की गई है। भगवान ने 'गीता' में कहा है कि तू कर्म कर, फल की इच्छा मत कर। फल को मुझे अर्पित कर। उसके बाद ही तू इसके प्रतिफल से बच सकेगा और इस जीवन-मरण से मुक्त होकर मेरे धाम में पूर्ण विश्राम पाएगा। गोस्वामी तुलसीदासजी ने रामचरितमानस में कहा है कि शुभ और अशुभ कर्मों के अनुसार ही ईश्वर व्यक्ति को फल प्रदान करता है। मनुष्य अशुभ कर्म करते वक्त सोचता है कि उसे कोई नहीं देख रहा है, परंतु ईश्वर का अंश यानी हमारी आत्मा सब देख रही है। इसीलिए हमें मनुष्य जीवन प्राप्त करने के मूल लक्ष्य यानी मोक्ष प्राप्त के बारे में सोचना चाहिए और जीवन-पथ पर चलते हुए नैतिक मूल्यों और जनकल्याण की भावना को ध्यान में रखते हुए कर्म करते रहना चाहिए।

कर्नल (रिटायर्ड) शिवदान सिंह

तीन पीढ़ियों का अंतर

फिर से

अब बच्चों के पास मां का पल्लू पकड़कर बैठने का वक्त नहीं है। वे कहानी भी नहीं सुनना चाहते। अब उनके पास मोबाइल है

आज सुबह से ही मन अपने अंदर बसी मां को ूढ रहा है। ढूंढते-ढूंढते कभी अपनी मां सामने खड़ी हो जाती है, कभी अपनी बेटी सामने होती तो कभी अपनी बहु सामने आ जाती है। तीन ीढ़ियों की तीन मां की कहानी मेरे अंदर है। एक ां थी जिसे पता ही नहीं था कि दुलार क्या होता ! बस वह काम में जुती रहकर, बेटी को डर सखाती थी। पिता का डर, भाइयों का डर, समाज ा डर, दुनिया का डर, हव्वे का डर, भूत का र। इस डर में दुलार कहीं खो जाता था। आज ी मां और तब की मां में कोई समानता नहीं । प्यार चुप था, मुखर नहीं था। लड्डू बनते थे, लुआ बनता था, लेकिन ढिंढोरा नहीं पिटता था क तेरे लिए बनाया है। न मां रोटी का कौर लेकर मारे पीछे भागती थी और न ही सोते समय लोरी ुनाती थी, बस कहानियां खूब थी। जो भी दुलार ा, यही था।

एक पीढ़ी गुजर गई, मेरी पीढ़ी आ गई। कुछ यादा शिक्षित। बच्चों का मन समझने की पैरवी रती शिक्षा और प्रयोगों से लैस। बच्चों की ुनिया मां के इर्द-गिर्द रहने लगी, अब मां ही दोस्त ी, मां ही शिक्षक भी थी। मेरे जैसी मां सबकुछ ुनती, बच्चे स्कूल से आते ही ढेर सारी बातों ा पिटारा साथ लाते। हमने मां से कुछ नहीं मांगा था, लेकिन अब मुझसे बहुत कुछ मांगा जाता था। यही अंतर मैं देख रही थी। मेरी मां के पास भोजन का अधिकार था, कितना देना है, कितना नहीं देना, लेकिन मेरी पीढ़ी के पास बाजार के अधिकार भी आ गए थे। पूर्ण अधिकार वाली मां के रूप में मैं खड़ी थी। मैं खुश थी कि मैं बच्चों को संस्कारित कर रही हूं, उनके पीछे मां का साया खड़ा है, इसलिए कोई डर उनके जीवन में आ ही नहीं सकता। मेरी मां डर से परिचय करा रही थी और मैं डर को भगा रही थी। शायद दो पीढ़ियों का यही मूल अंतर है।

आज तीसरी पीढ़ी मेरे सामने खड़ी है, मेरी बेटी के रूप में और मेरी पुत्रवधु के रूप में। मां का गौरवगान बढ़ने लगा है, मातृदिवस भी मनने लगा है। मेरी मां को पता ही नहीं था कि वही सबकुछ है, लेकिन मुझे समझ आने लगा था कि मैं भी कुछ हूं, लेकिन आज मां ही सबकुछ है, यह स्पष्ट होने लगा है। मेरी मां से हम कुछ नहीं मांगते थे, मुझसे थोड़ा मांगा जाता था, लेकिन अब मांग बढ़ गई है। मांग बढ़ी है तो जिद भी बढ़ी है। डर जीवन से एकदम से दूर हो गया है। अब रिश्ते को बताना पड़ रहा है, पहले का मौन सा दुलार अब मुखर हो रहा है और मुखर होते-होते प्रखर वार करने लगा है। अब मां को बताना पड़ रहा है कि मैं तुम्हारी मां हूं, संतान से अपने रिश्ते की दुहाई देनी पड़ रही है। अब बच्चे को मां का पल्लू पकड़कर बैठने की फुरसत नहीं है, वह कहानी भी नहीं सुनना चाहता, उसके पास मोबाइल है।

मेरी मां को याद करते-करते मैं खुद को देख लेती हूं और फिर बेटी और पुत्रवधु को देख लेती हूं। तीन पीढ़ियों की तीन मां मेरे सामने हैं। कभी हम मां से शिकायत करते थे कि मां तुम हमें समय क्यों नहीं देती? फिर हम सीमित समय देने लगे, लेकिन अब मां पूछने लगी है कि बेटा क्या मेरे लिए कुछ समय है तुम्हारे पास! कल तक मां के लिए कोई चर्चा नहीं थी, लेकिन मां परिवार में शीर्ष पर बैठी थी, आज मातृ-दिवस मनाती मां, परिवार में कहीं नहीं है!

(अजित गुप्ता का कोना ब्लॉग से साभार)

मेलबाक्स

मोदीमय रहा 2019 का आम चुनाव

संजय गुप्त ने अपने आलेख 'मोदी की साख ने किया बड़ा बदलाव' में 2019 के आम चुनाव में उभर कर आने वाली विपक्ष की कमजोरियों को उजागर करते हुए जिस तरह से मोदी की व्यक्तिगत साख को भाजपा की जीत का आधार बताया है, वह अपनी जगह सही है। वस्तुतः 2019 का आम चुनाव पूरी तरह से मोदीमय रहा। पक्ष में भी मोदी और विपक्ष की आलोचना के केंद्र में भी मोदी ही दिखाई दिए। 'मोदी है तो मुमकिन है' और 'आएगा तो मोदी ही' जैसी अवधारणाएं जन-सामान्य के बीच खूब चर्चित रहीं। इतना ही नहीं मोदीमय विपक्षी आलोचना की पराकाष्ठा तब दिखाई दी जब कांग्रेस ने 'चौकीदार चोर है' का झूठा नारा लगाया। हालांकि देश के प्रधानमंत्री मोदी के व्यक्तित्व को धूमिल करने करने वाली कांग्रेस की यह कोशिश न केवल नाकाम रही, अपितु भारतीय जन-मानस में इसका नकारात्मक संदेश गया। क्योंकि कांग्रेस का यह घृणास्पद नारा मोदी के ईमानदार व्यक्तित्व के सर्वथा विपरीत था। राफेल विमान सौदे पर बिना सुबूत भ्रष्टाचार की झूठी मोहर लगाना भी कांग्रेस को भारी पड़ा। इस तरह कांग्रेस सहित अन्य विपक्षी दलों ने जितना अधिक मोदी के साफ-सुथरे व्यक्तित्व पर कीचड़ उछालने की कोशिश की, वह उनके खुद के लिए उल्टी पड़ी। पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने मोदी की व्यक्तिगत आलोचना में क्या कुछ नहीं कहा, बावजूद इसके मोदी ने अपना संयम नहीं खोया और उनके लिए 'दीदी' के सम्मानजनक संबोधन के साथ बड़ी शालीनतापूर्वक अपनी बात रखी। मोदी की यह अदा जनता के दिल में इस कदर उतर गयी कि पूरा चुनाव ही मोदीमय हो गया। जो लोग अपने दुराग्रहवश मोदी का विरोध कर रहे थे उन्होंने बेशक नोटा का प्रयोग करके अपने मन को शांति प्रदान कर ली हो, लेकिन अंततोगत्वा उन्होंने अपने महत्वपूर्ण मताधिकार को नोटा रूपी डस्टबिन के हवाले ही किया। इस दृष्टि से 2019 का आम चुनाव परिणाम के बाद भी मोदी चर्चा से लवरेज है, इस मायने में यह आम चुनाव अभूतपूर्व माना जा सकता है।

डॉ. वीपी पाण्डेय, अलीगढ़

यूं हारी कांग्रेस

राहुल गांधी हर समय मोदी सरकार पर भ्रष्टाचार में संलिप्त होने के आरोप लगाते रहे। जनता ने इस पर विश्वास नहीं किया। चौकीदार चोर की संज्ञा देना भी कांग्रेस की हार का एक प्रमुख कारण बना। घोषणा पत्र में न्याय योजना का जिक्र और उस पर हद से ज्यादा जोर देकर कांग्रेस ने सबसे बड़ी भूल की। इससे आम जनमानस को संदेश गया कि कांग्रेस की नीति केवल जनता को लालच देकर सत्ता हथियाना है। लाजमी है कि जब देश मुफ्तखोरी की ओर कदम बढ़ाएगा तो विकास स्वतः ही अवरुद्ध हो जाएगा। कांग्रेस की एक और बड़ी भूल थी कि लोकसभा चुनाव से पहले 3 राज्यों में मिली जीत को उसने हिंदी भाषी राज्यों में अपनी स्थिति मजबूत समझ ली। वहीं तमाम छोटी-बड़ी क्षेत्रीय पार्टियों से गठबंधन ना करना भी हार का एक बड़ा कारण माना जा सकता है। क्योंकि जिस तरह से बसपा ने सपा से गठबंधन कर अपनी स्थिति में सुधार किया, यदि कांग्रेस भी ऐसा करती तो शायद और सीटें हासिल कर सकती थीं। वर्तमान में कांग्रेस की सबसे बड़ी कमजोरी है कि वह युवाओं को नहीं जोड़ पा रही है। देश के युवाओं को शिक्षा और रोजगार नीति में बदलाव की दृढ़ इच्छाशक्ति केवल मोदी में ही दिखती है। इतना ही नहीं, भाजपा ने जाति-जमात से इतर राजनीति का संदेश भी पिछले 5 सालों में देशवासियों को दिया है। यही कारण है कि देशवासियों में राष्ट्रवाद की भावना का विकास हुआ है। तमाम कल्याणकारी योजनाओं के जरिए किसानों, नौजवानों, महिलाओं, बुजुर्गों और बच्चों का भविष्य उज्ज्वल किया है। देश के हर कोने में यही सुनने को मिलता है कि मोदी ने काम अच्छा किया है, आज उसी का नतीजा सबके सामने है।

पिंटू सक्सेना, दिल्ली

महिलाएं किसी से कम नहीं

कल्पना चावला, मदर टेरेसा और रानी लक्ष्मी बाई की तरह एक बार फिर भारतीय महिलाओं ने इतिहास रच दिया। फ्लाइट लेफ्टिनेंट भावना कंठ वायु सेना की पहली ऐसी महिला पायलट बनीं, जिन्होंने लड़ाकू विमान में युद्ध मिशन पर जाने की योग्यता हासिल कर ली है। वहीं दूसरी ओर हिसार की अनीता कुंठू और फतेहाबाद जिले की मनीषा ने एवरेस्ट से प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को सलामी दी। ये दोनों घटनाएं समाज के सामने यह उदाहरण पेश करती हैं कि हां, महिलाएं किसी से कम नहीं, बल्कि आगे हैं।

एकता, डॉ. भीम राव आंबेडकर कॉलेज, दिल्ली

इस स्तंभ में किसी भी विषय पर राय व्यक्त करने अथवा दैनिक जागरण के राष्ट्रीय संस्करण पर प्रतिक्रिया व्यक्त करने के लिए पाठकगण सादर आमंत्रित हैं। आप हमें पत्र भेजने के साथ ई-मेल भी कर सकते हैं।

अपने पत्र इस पते पर भेजें :
दैनिक जागरण, राष्ट्रीय संस्करण,
डी-210-211, सेक्टर-63, नोएडा
ई-मेल : mailbox@jagran.com

संस्थापक-स्व. पूर्णचन्द्र गुप्त. पूर्व प्रधान संपादक-स्व.नरेन्द्र मोहन. संपादकीय निदेशक-महेन्द्र मोहन गुप्त. प्रधान संपादक-संजय गुप्त, जागरण प्रकाशन लि. के लिए: नीतेन्द्र श्रीवास्तव द्वारा 501, आई.एन.एस. बिल्डिंग, रफी मार्ग, नई दिल्ली से प्रकाशित और उन्हीं के द्वारा डी-210, 211, सेक्टर-63 नोएडा से मुद्रित, संपादक (राष्ट्रीय संस्करण) -विष्णु प्रकाश त्रिपाठी*
दूरभाष : नई दिल्ली कार्यालय : 23359961-62, नोएडा कार्यालय : 0120-3915800, E-mail: delhi@nda.jagran.com, R.N.I. No. DELHIN/2017/74721 * इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन हेतु पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी। समस्त विवाद दिल्ली न्यायालय के अधीन ही होंगे। हवाई शुल्क अतिरिक्त।